Ist Paper
B.A. III Hons

पुराना या पुरापाषाण युग- (Palaeolithic or Old Stone Age)

यह युग भारत के प्राक्-इतिहास का सबसे लम्बे काल था। यह युग 6 लाख वर्ष से 10 हजार वर्ष तक माना जाता है। यह युग हिमपात और घोर वारिश का काल था। अतः प्रकृति, जलवायु और वातावरण सर्द था। इसलिए इस युग का मानव कन्दरा, शिलाश्रय और सघन छायादार वृक्षों के नीचे रहता था। इस काल के मानव जीवन के विकास को परिलक्षित करने की दृष्टि से तीन कालों में बाँटकर अध्ययन किया जाता है

1. निम्नपूर्व पाषाण काल (LOWER Palaeolithic Period.)
2. मध्य-पूर्व पाषाण काल (Middle palaeolithic period)
3. उच्च पूर्व पाषाण काल (Upper palaeolithic period)

1. निम्नपूर्वपाषाण काल (LOWER Palaeolithic Period →

हिमयुगीन संस्कृति

निम्नपूर्व पाषाण काल मानव के प्राक् इतिहास का ही नहीं, बल्कि दृष्टि में मानव के विकास के उषा-काल की संस्कृति माना जाता है। इस संस्कृति के निर्माता मानव-सम-रूप था। यह हिमयुगीन संस्कृति थी, जब बर्फीला तूफान चलता रहता था और वर्ष में दो बार सघन वर्षा की लम्बी प्रवृत्ति चलती थी। फलतः भूमि पर रहनेवाले रूप (Earth Dweller Ape) अस्तित्व में आए। जीवन रक्षा हेतु इसी काल में रूप ने भोजन-आदत बदलकर कन्दमूल को जीविका का आधार बनाया और कन्दरा, शिलाश्रय तथा सघन छाया को निवास बनाया।

भारत में निम्न-पूर्व पाषाण के काल के मानव के जीवाश्म तो नहीं मिले हैं, किन्तु उनके पाषाण-हथियार और उपकरण बड़ी संख्या में मिलते हैं। इन हथियारों-औजारों के तकनीक और प्राप्ति-स्थान को भौगोलिक क्षेत्र की दृष्टि से दो ~~भाग~~ बाँटा गया है सोहन उद्योग (Sohan Palaeoliths) और मद्रास उद्योग (Madras palaeoliths)

Scanned with CamScanner

2. मध्य-पूर्व पाषाण काल (Middle Palaeolithic Period)

:→ भारत में मध्य-पूर्व पाषाण काल के सम्बन्ध में खोज और अनुसंधान का काम 1954 ई० से शुरू हुआ। पुराविदों ने कर्नूल, बाँकुड़ा, सिंहभूम तथा नर्मदा घाटी प्रवरा नदी की नेवासा से मध्य-पूर्व पाषाण हथियार-औजारों का खोज निकाला। भारत में मध्य-पूर्व पाषाण- हथियार और औजारों उन सभी जगहों से पाये गए जहाँ से निम्न-पूर्व-पाषाण काल के पाये गये थे। इससे यह माना जाने लगा कि हस्तकुठार पाए गये थे, वहाँ निम्नपूर्व पाषाण काल से ही मध्य-पूर्व पाषाण भारत में संस्कृति का विकास और प्रसार हुआ।

निम्न-पूर्व पाषाण काल की तुलना में मध्य-पूर्व पाषाण काल की अवधि छोटी थी। इस काल में हिमपात में काफी कमी आयी थी, किन्तु वर्षा की प्रधानता थी। अतः वातावरण पहले से शुष्क होता जाता था। इसलिए इस काल की मानव जीवन पद्धति में परिवर्तन आना स्वाभाविक था। जनसंख्या की भी वृद्धि हुई। फलतः जीविका के साधन और हथियार-औजार में भी वृद्धि और परिवर्तन आने लगा। बड़े और कम गढ़े हुए और भद्दे पत्थर के हथियारों की जगह - चमकीले और सुडौल पत्थर के हथियार बनने लगे। हस्तकुठार की जगह हस्त-फलक हथियार बनने लगे। और कोर हथियार की जगह फलक हथियार बनने लगे। और हथियार और औजारों में वेधक, खुरचनी (Scrapers) जैसे हथियार और औजारों में बेधक, खुरचनी (Scrapers) जैसे हथियार और पाषाण बर्छी (Points) बनने लगे। इन नये हथियार-औजारों से अनुमान लगाया जाता है कि मध्य-पूर्व पाषाण काल में शिकार प्रारम्भ हो चुका था। कि मध्य-पूर्व पाषाण काल में हथियार-औजार नदी के किनारे, गुफाओं, पहाड़ के ढालों पर समतल और मैदानी भाग में भी प्राप्त किये गए हैं। अतः इस काल में मानव भारत की धरती पर दूर-दूर तक अपने आखेट जीविका के लिए फैलने लगे।

मध्य-पूर्व पाषाण काल में मानव-जीवन की क्षेत्रीय - विशेषताएँ उभरने लगीं। अतः इस काल में मानव- जीवन में कुछ सांस्कृतिक चेतनाओं का भी आविर्भाव होने लगा। इस काल के अन्त में फलक - blade (छुरा) स्क्रेपर (खुरचनी) बनने लगे। इस तरह के उपकरण बेलन घाटी और उड़ीसा के अनेक स्थानों से पाए गए हैं। अतः जी० सी० महापात्रा का अनुमान है कि- मध्य-पूर्व पाषाणकालीन

बेलनघाटी और उड़ीसा

भारतीय मानव शिकारी जीवन ~~व्यतीत~~ व्यतीत करते थे और पशुचर्म का वस्त्र के रूप में उपयोग करने लगे थे।

उत्तर-भारत की अपेक्षा दक्षिण-भारत में मध्य-पूर्व पाषाण काल में अधिक विकास देखा जाता है। बर्किट और कामिनेड ने आन्ध्र प्रदेश के नागार्जुनकोण्ड से क्वार्टजाइट के बने हथियार-औजार के अतिरिक्त सैण्ड स्टोन और चाल्सडोनी के भी उपकरण की प्राप्ति की है। कर्नाटक से लेकर महाराष्ट्र तक मिलने वाले मध्य-पूर्व पाषाण हथियार-औजारों में चाल्सडोनी के तीक्ष्ण धार वाले खुरचनी, वेधक, ~~छिद्रक~~ छिद्रक और ब्लेड की संख्या में काफी वृद्धि होने का प्रमाण प्रतीत होते हैं कि दक्कन में शिकारी जीवन तेजी से विकसित हुआ।

पश्चिम भारत में भी शिकारी-जीवन में उत्तरोत्तर वृद्धि के प्रमाण मध्य-प्रदेश के बेसान, बेतवा और सोनघाटी से, राजस्थान के लुनी घाटी से और गुजरात के कई स्थानों से मिले हैं। हस्त-कुठार की संख्या में ह्रास और फलक-औजार जैसे-चाकू, ब्लेड, खुरचनी, वेधक आदि में वृद्धि वृद्धि देखी जाती है। इस युग के पशु-जगत में वृद्धि ने आखेट-जीवन को प्रोत्साहित किया था। अग्नि के आविष्कार के सम्बन्ध में प्रमाण दुर्लभ है।

इस तरह मध्य-पूर्व पाषाण काल भारत में प्रागैतिहासिक संस्कृति के आखेट-युग का प्रथम युग था, जब मानव में पुनः भोजन-आखेट में परिवर्तन आया था।

3. उच्च-पूर्व पाषाण काल:- (Upper Palaeolithic Period):→

ब्लेड-ब्यूरिन उद्योग

भारत में उच्च-पूर्व पाषाण काल के अध्ययन के सम्बन्ध में दो तरह के विचार प्रतिपादित किए गये हैं। प्रथम सिद्धान्त बी० सुब्बाराव का है। इनके अनुसार "भारत में उच्चपूर्व पाषाण काल को अफ्रीका के उत्तर-पाषाण काल (Late Palaeolithic Age) की भाँति अध्ययन करना चाहिए"। भारतीय उच्च-पूर्व पाषाण काल को "ब्लेड-ब्यूरिन उद्योग" के नाम से भी जाना जाता है।

उच्च-पूर्व पाषाण काल के हथियार-औजार सर्वप्रथम १९७० ई० कामिनेड और एम० सी

Scanned with CamScanner

बर्किट ने हथियार-पूर्व काल से प्राप्त किया था। कर्नूल टॉड ने बम्बई के खण्डिवली से और जी० आर० शर्मा ने मध्य प्रदेश के सोनघाटी, बिहार के सिंहभूम, उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर, वाराणसी से ब्लेड-ब्यूरिन प्राप्त किये हैं। एम० एल० कृष्णामूर्ति ने संगारावर के पाटन से और वी० अलचीन ने गुजरात से ब्लेड-ब्यूरिन प्राप्त किया। इस तरह भारत के विशाल क्षेत्र से उच्च-पूर्व पाषाण काल के क्रमिक विकास ने उच्च-पूर्व पाषाण संस्कृति को जन्म दिया।

उच्च-पूर्व पाषाण काल के हथियार-औजारों के पाषाण की किस्मों में अन्तर आया है। फलतः क्वार्ट्ज पत्थर के हथियार-औजार बनने लगे। फलतः हथियारों के किनारे मजबूत और तीक्ष्ण होने लगे। कोर पत्थर से बड़े हथियार-औजार और फलक से छोटे हथियार बनने लगा। इस तरह उच्च-पूर्व पाषाण काल में हथियार-औजार उद्योगों में जाति वृद्धि और परिवर्तन के प्रमाण मिलते हैं। फलतः उच्च-पूर्व पाषाण काल की मानव जीवन-पद्धति में भी कुछ विशेष परिवर्तन हुए। शिकार सामूहिक जीवन का अंग बन गया। हथियार-औजारों के निर्माण में विशिष्टता आयी। शिकार में शक्तिशाली मानव प्रायः मानव और शिकार में नेतृत्व करने की भूमिका प्रकट के सामूहिक जीवन में होने लगी। अग्नि के आविष्कार ने मानव-जीवन को एक नया आयाम दिया था। पशु-चर्म का उपयोग बढ़ गया था। बेलनघाटी से मिले हड्डी की नोकदार छड़ की पूर्ण ज्ञान होने पर यह संभावना व्यक्त की जाती है कि इस काल की औरतें सिलाई का काम करती थीं। पाटन (महाराष्ट्र) से मिले शंख जड़ी और शुतुरमुर्ग के अण्डे पर सीधी और तिरछी रेखा से अलंकरण और बेलनघाटी से मिली हड्डी की नारी मूर्ति से मातृ-देवी की पूजा का अनुमान लगाया जाता है। इस तरह उच्च-पूर्व पाषाण काल में संस्कृति के कई नये लक्षण प्रतीत होते हैं। बेलन घाटी से जो कार्बन-14 तिथियाँ उपलब्ध हुई हैं। जिसके आधार पर माना जाता है कि भारत में उच्च-पूर्व पाषाण संस्कृति ईसा से पूर्व 32,000 वर्ष से लेकर ई० पू० 10,000 वर्ष के बीच में रही होगी।

Scanned with CamScanner